'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 1 Issue. 2
ISSN : 2348-7143 (Online)
April-June-2014

# नवम दशक के आदिवासी उपन्यासो में नारी विमर्श

**प्रा. डॉ. कल्पना पाटील**
**स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष,**
**धनाजी नाना महाविद्यालय, फैजपूर,**
**जलगाँव, महाराष्ट्र, भारत.**

हिंदी साहित्य में आधुनिक काल की यदि बात करे तो विमर्श का दौर चल रहा है। आदिवासी विमर्श, स्त्री-विमर्श, फासीवादी विमर्श, दलित विमर्श, युवा आक्रोश फासीवादी विमर्श आदि। साहित्य चिंतको का एक वर्म हमेशा जन सरोकारो के प्रति प्रतिबद्ध रहा है। इक्कीसवी सदी में रचे जानेवाले उपन्यासो के केंद्र में मुख्य प्रश्न सामाजिक पीडा यही रहा है। आदिवासी विमर्श पर काफी चर्चा हो रही है। आदिवासी आज भी गुलामी और बदहाली का जीवन जीने को मजबूर है। आदिवासी का अर्थ- "आदि याने पहला आरम्भ तो आदिम का अरबी अर्थ मनुष्य का आदि प्रजापति मनु के समांतर। आदिवासी याने किसी प्रदेश या राज्य के मूल निवासी।"[१] आदिवासी से ताप्तर्य है जंगली या वनवासी वन में रहनेवाले आदिम। आदिवासी का शाब्दिक अर्थ है आदि युग से देश में रहनेवाली जातियाँ। नवम दशक में भारतवर्ष विविध अर्न्तविरोधो से ग्रस्त रहा है, इसमे साहित्य कैसे अछूता रह सकता है। आज एक तरफ विश्व सिमटता जा रहा है। ग्लोबल विलेज की संकल्पना सामने आ रही है। तो दूसरी और मनुष्य और मानवीयता सिमट रही है। भारतीय मानवी समाज विभिन्न धर्मो संप्रदायो तथा विभिन्न जनजातियों में विभक्त हुआ है। ऐसे समान मानव समुदायवाले देश में पुरूष की तुलना में नारी की स्थिति अत्यंत गौण है। हिंदी के आदिवासी जीवन केंद्रीत उपन्यासकारो ने भारतीय आदिवासी नारी की परंपरागत एवं परिवर्तीत स्थिति को अपने साहित्य में वाणी प्रदान की है। नवम दशक में १९८१ में मणि मधुकर का 'पिंजरे में पन्ना' राकेशवास का १९८२ में 'जंगल के आसपास' हिंमाशू जोशी का 'सुराज' १९८४ में बटरोही का 'महर ठाकुर का गाँव' १९८६ में सुरेश चंद्र श्रीवास्तव का 'वनतरी', १९८७ में डॉ. एन. रामन नायर का 'सागर की गलिया', १९८९ में शिवप्रसाद सिंह का 'शैलेषु' तथा १९९० में सजीव का 'धार' आदि आदिवासी उपन्यास मिलते है। मणिमधुकर का 'पिजरे मं पन्ना' में राजस्थान के लोकजीवन और लोककला को चित्रीत किया है। इसमें गाडिया लुहार, ख्याल की नायिका पन्ना और रम्या की लोककला की गवेषणा यह तीन कहानियाँ समांतर चलती है । गाडिया लुहारो की कथा से यायावर जीवन पन्ना की कथा सें पूँजीवादियो द्वारा नारी शोषण और नंदे रम्या की कथासे लोककला के डान्स का चित्रण हुआ है। ख्याल राजस्थान के लोकजीवन में प्रचलित लोकनाट्य है। उपन्यास में पन्ना के माध्यम से नारी जीवन और लोककला का अंकन हुआ है। पन्ना कला की अमर उपासिका है सुरध्यायी ख्याल के इतिहास में अपने अपूर्व सौंदर्य आवाजसे, अदाकारीसे महत्वूपर्ण स्थान प्राप्त किया है। "यह तो उसका रंग क्षेत्र था, कर्मस्थल! जिसके लिए उसने प्रेम की पुकार को लौटा दिया था और अंत में अकेली रह गई थी। उसी एकाकी पन्ना को नाचते-गाते संवाद बोलने देखने के लिए इन

ढाणियोसे भी उमडकर इकठ्ठा होती थी।"[२] पन्ना चेतराम से प्रेम करती है , लेकिन ख्याल के बंधनो के कारण विवाह नही कर पाती। ख्याल की नायिका का जीवन मात्र शोषित पाया है। सामंती वर्ग से लोकजीवन की नारी शोषित पायी जाती है। उपन्यास के शीर्षक से ही कारा में जखडी नारी की व्यथा का संकेत मिलता है। यहाँ पन्ना निम्न वर्ग की शोषित नारी है, तो पिजरा पूंजीवादी शोषक व्यवस्था का प्रतीक है। ख्याल की नायिका पन्नाको रिछपाल ठाकूर अपनी रखैल बनाना चाहता है, स्वाभिमानी पन्ना इस बात का विरोध करती है, तो रिछपाल के अहं को ठेस पहुचती है। वह पन्ना के साथ अमानुष व्यवहार करता है, उसके घरको आग लगा देता है। पन्ना की सहायता करनेवाले लोगो पर भी रोष व्यक्त करता है। पन्ना की मदद करनेवाले के हाथ, पाँव, कान तोड देते है। पन्ना फिर भी अपना निर्णय नही बदलती तो ठाकूर कुटिलता से उसकी हत्या कर देता है और उसे आत्महत्या के रूप में प्रस्तुत करता है। नंदे रम्या को बताता है, "रिछपाल ठाकुर की एक गोली ने पन्ना को धोखा देकर सखिया खिला दिया था।"[३] यहाँ स्पष्ट रूप से दिखाया है कि लोकजीवन की नारी आज भी सामंती मानसिकता की शिकार हो रही है। उपन्यास में शोषित और अन्याय के प्रति चेतना भी पाई जाती है। पन्ना रम्या और बुज्जी इन नारीयो में साहस और अन्याय विरोधी चेतना मिलती है। स्वाभिमानी पन्ना साहस के कारण अपनी अलग पहचान बनाती है। वह रिछपाल के अन्याय अत्याचार का डटकर मुकाबला करती है किंतु उसकी रखैल बनना पसंद नही करती। वह ख्याल के मचान से ही उसके मुखपर थूँकती है। अपनी पुत्री रम्या को सहेजकर रखती है। रम्या अपने माँ पर हुए अन्याय के विरोध में खडी होती है। वह कलकत्ता छोड ख्याल की नायिका बनने के लिए रेगिस्तान जाती है । नंदे को ख्याल में उतरने का निर्णय बताती है। नंदे कहता है कि, "पन्ना तो बार बार जन्म लेती है लेकिन हर बार उसके लिए पिंजरा तैय्यार होता है। तो रम्या मैं उस पिंजरे को तोडुंगी।"[४] रम्या पन्ना का ही पुर्नरूप है । बुज्जी गाडिया लुहारन नारी का अलग ही रूप है । उसमें स्वाभिमान, साहस अन्याय विरोधी चेतना की प्रबलता है। उसके पति को पुलिस गिरफ्तार कर ले जाती है, तब बुज्जी अत्यंत क्रोधीत होती है घागरा कुडता ओढना उतारकर पुलिस के सामने खडी होती है। पुलिस को गालिया देती हुई उनके मुँह पर थूंकती है और कहती है, "बच्चा है इसमे, मेरा और मेरे धनी का। हम गाडिया लवारो में औरते ही बच्चा जनती है, तुम लोगो के बच्चे कुतियो के कोख से निकलते होंगे।"[५]

'जंगल के आसपास' आदिवासी जीवन केंद्रित है। शोन नदी के किनारे फैले जंगल और पहाडियो मे बसे दमकडी अंछाल के पिछडे और शोषित आदिवासीयो का अछूता अभिशप्त जीवन अंकित हुआ है। उपन्यास में अन्याय आतंक पूजीपतियोद्वारा शोषण चेतना आदि प्रस्तुत है। केंद्र में दमकडी के अंछाल और वहा के आदिवासी है। रायसहाब इस लोकके अकेले बेताज बादशाह हैं। रायसाहब और ओझा मिलकर सबपर अपना नियंत्रण बनाते है। अपनी बेटियो पर बलात्कार होने के बावजूद गोमा और संतो के मातापिता खामोश रहते हैं । मास्टर दिनेश और डॉ. तुलसी उनपर मुकादमा दायर करने की बात करते है, तब गोमा के पिता कहते है, "डाकघर दादा आप हमारे पीछे हाथ धोकर क्यो पड गए है। आपको क्या मिलेगा हम गरीब लोगो को बरबाद करके? आप हमें क्यो चैन से रहने देना नही चाहते।"[६] पूँजिपति

ओझा पुलिस और बाह्य शक्तियाँ नारीयो के साथ अमानुष व्यवहार करते है। रायसाहब के बेटे के डर से इलाके की बहु बेटिया चैन की नींद नही ले पाती। रायसाहब के गुंडे आदिवासी नारियो पर दिन दहाडे बलात्कार करते है। रॉबर्ट शराब के नशे में आधी रात बितवा के घर का दरवाजा तोडकर अंदर घुसता है और उसकी मासूम बेटी गोमापर बलात्कार करता है। रायसाहब का उसे मूक समर्थन मिलता है। किसना की बेटी संतो पर तो दिन दहाडे बलात्कार करता है, लोग इस असहाय पीडा को सह लेते है । यदि कोई औरत शिकायत करती है, तब रायसाहब और ओझा की अदालत में न्याय होता है। बलत्कारित नारी को अग्निपरीक्षा देनी पडती है। वह अग्निपर बंधी रस्सी को पार करे तो उसे न्याय मिलता है । न्याय भी क्या होता है बलात्कार करनेवाला लडकी के पिता को कुछ रूपये देता है और छुट जाता है। किन्तु रस्सी हाथ में रखनेवाला ओझा का आदमी अक्सर उसे अग्नि में गिरा देता है। ओझा का अग्निपरीक्षा के बारे में समर्थन प्रस्तुत है, "अग्निपरीक्षा एक धार्मिक काम है। रामायण काल से ही हमारे देश में वह चला आ रहा है । माँ सीता को भी तो अग्नि परीक्षा देनी पडी थी। अगर परीक्षा देती हुई कोई औरत जल जाती हैं तो यह देवता की मर्जी से होता है, इसमें हम या आप क्या कर सकते है ।"[७]

बंगालन माँ सुचित्रा और श्यामा तो अन्याय का विरोध करती हुई मिलती है। अदिवासी चंदेरी कहती है, "तुम लोग मर्द हो अपनी बहू बेटियो की इज्जत बचाना तुम लोगो का धर्म है , इसमें रायसाहब ओझा को बीच में घसीटने की जरूरत क्या पड गई तुम लोगो को।"[८] नारी विद्रोह अगतिया की अपाहिज पत्नी जमना में भी है। अंतिम समय जब पुरूष रायसाहब के विरोध मे खडे होते है तब औरत भी खडी होती है। बुढी दादी कहती है, अपने पूर्वजो के समान झगडकर मरेंगे और प्रेत योनी में जाने से बचा जाएंगे। बंगालन सुचित्रा स्वाभिमानी साहसी और विद्रोही नारी का प्रतिनिधीत्व करती है । परिस्थिती ने वेश्या बनाई सुचित्रा नथूराम से अंर्तजातीय विवाह करती है। रायसाहब के गुंडे उसकी इज्जत लुटने की कोशिश करते है, तब वह घायल शेरनी अपने साहस का परिचय देती है । श्यामा में भी साहस चेतना है, वह स्वयं को काली का भक्त मानती है और जंगल में अकेली हाथ में दराती लेकर घुमती है। उसने रीच को मारा है। "उसके गले में स्थित जंगली जानवर का तिखा नाखून यही दर्शाता है कि मानो मौत और विद्रोह को गले में लेकर घूमती है।"[९] डॉ. तुलसी तो कहते है वह दस मर्दो की एक मर्द है। हिमांशी जोशी के 'सुराज' की कथा के केंद्र में स्वतंत्रता सेनानी गगिका है। कुमाऊ के पहाडी परिवेश का अंकन हुआ है। उनके बेटे नंदू और देवा विधवा भाभी के साथ अमानवीय व्यवहार करते है। सुराज में संकलित दूसरी उपन्यासिका अंधेरा और यह हिमालय के तराई क्षेत्र में जीवनयापन करनेवाले आदिवासीयो के जीवन की अधिशप्त एवं करूण व्यथा है। जमीदार और पुलिस द्वारा किया जानेवाला नारी शोषण इसके केंद्र में है। यहॉ आदिवासी नारी बाह्य शक्तियो का शिकार होती है। फारमवाले आदिवासी नारीयो को भगाकर उनके साथ खिलवाड करते है। धरमू प्रधान का बेटा झन्नू शंखी को मेला दिखाने के बहाने ले जाता है। "शहर में मेला दिखाने का लालच देकर झन्नू ने उसे जबरदस्ती ट्रक पर बैठालिया। बहेडी पहुचने पर मेला तो

क्या दिखलाया था। उसेही मेला अवश्य बना दिया था। किसी खपरैल वाले पुराने मकान में अंधेरे कमरे में बंद करके जबरदस्ती देशी दारू गले में उडेली और सारे कपडे उतारकर उन्हे किसी दूसरे कमरे में छिपा दिया था ताकि बिना कपडो के बाहर न भाग सके। उसे होश नही क्याक्या जुलम उसके साथ होता रहा। जगह जगह उसके शरीर पर नीले निशान थे, घाव थे। दिनो तक वह बिस्तर पर पडी रही। बाद में पता नही क्या हुआ उसे, वह पागल सी हो गई थी।"[१०] इसी में उसकी मृत्यु होती है। साहुकार सीसराम ब्राम्हण भी पंचमी काका की विधवा भावज के साथ जबरदस्ती करते है। सोहनसिंग भी, परसिया की युवा बहन चंदरीया पर बलात्कार करता है। पुलिस का सिपाही दिन दहाडे पंचमी काका की झोपडी मे घुसकर उसकी बहू के साथ बदफैली करता है। चंदरिया कंचनिया, और अमिता के साथ पुलिस तहकीकात के नाम पर अमानुष व्यवहार करती है। रक्षकही भक्षक बनते है। परसिया बहन पर हुए बलात्कार के बाद पंचायत थाना सब जगह जाता है, जब कोई उसकी बात नही सुनता तब सोहनसिंह की हत्या कर देता है। तहकीकात के नाम पर भीखू अमिता और बेटी चंदरिया को ले जाते है। तहकीकात के नामपर मारपीट और बलात्कार का सिलसिला जारी रहता है। 'महर ठाकुरोर का गॉव' उपन्यास अलमोडा जिले की गहरी घाटियो में बसे सीरगाड नामक पहाडी अछूते अंचल पर केंद्रित है। यहॉ महर ठाकूर रहते है। उपन्यास में परतिमा की कथा भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। पति ललदा शहर में रहनेसे परतिमा यौन कामना से पीडित होकर हरदा की और आकर्षित ह ोती है। लेकिन सन्यासी हरदा उससे कटा रहता है। पहाडी नारी का जीवन अभिराज मिलता है। पहाडी गॉवो में मानो नारिया भोर का उजाला फूटने पर जन्मती है। और फिर गायब होकर सॉझ को उग आती है। औरत जात को यहॉ निम्न कोटि का जीवन जीना पडता है। खिमू काकी की मृत्युपर हरदा नारियो से सलाह लेने की बात करता है तब मुखिया कहते है, "क्या कह रहा है तू ! हम औरतो से पूछे! औरत जात से हम बात करे जाकर। तुम्हारे ही शातरो में लिखा हैं कि औरत जात को ज्यादा मुँह नही चढाना चाहिए, हरदा। जिस औरत को हमने हमेशा अपने पॉवो के नीचे दबाकर रखा है, क्या कहते हो तुम हम जाकर उससे पूछे।"[११]

'वनतरी' यह कृति मूलत: अभिशप्त शोषित और विस्थापन से गुजरते वनजातीय जीवन की एक करूण त्रासदी है। उपन्यास में पलानू जिले के होयहातू प्रखंड का डुमरी अंचल है , इस क्षेत्र में गुईया, तुरी महरा, महतो आदि जनजातियॉ भी मिलती है। परहिया आदिवासीयो का विवेचन लेखक ने किया है। मिथिल वनतरी की प्रेम कहानी सुकुल परहिया का स्वछन्दी जीवन, जमीदार परमजितसिंह के काले कारनामे, अधिकारियो की कर्तव्यहीनता आदि कथाएँ इसमें मिलती है। डॉ. मरियम्मा के माध्यम से सेवाभावी नर्स की कहानी सामने आती है । उपन्यासकार ने बुदधू परहिया के घर जन्मी वनतरी के माध्यम से कटते जंगल के साथ लुप्त होती परहिया जाति के प्रति संवेदना और जीवन संघर्ष को आवाज दी है। जंगल तथा पेडोपर वह जान से ज्यादा प्यार करती है। वह एक ऐसी पहाडी धरती की युवती है जो मनुष्य से कम और प्रकृति से अधिक संबंध रखती है। लेखक कहते है, "कलकल करती हमेशा पहाडी नदी की तरह खिल-खिलाती रहती। प्रकृति ने बडे लाड-प्यार से उसे सँवारा। ऑखो में चपलता, पैरो मे नृत्य और रोए-रोए में स्फूर्ती। फिर

तो सुबह से शाम तक मोरनी की तरह नाचती रहती। बोलती तो पेडो के पत्ते भी सुनने को खामोश हो जाते।"[१२] वनतरी सिस्टर मरियम्मा की सहायता से हायस्कुल तक की पढाई पूरी करती है । शिक्षा से उसमें अधिकार बोध और चेतना प्राप्त होती है। साहसी और निडर वनतरी अन्याय और शोषण का विरोध करती है। जमीनदार एवं उनके बारहिलो से आदिवासी नारी अत्यंत शोषित पाई जाती है। ठाकूर के गुंडे ठाकुर के आदेश पर गाँव की किसी भी युवती को उठाकर ले आते है। ठाकुर उनके साथ अपनी रात रंगीन बनाता है। सुगिया तुरीन जैसी अनेक गरीब युवतियॉ ठाकुर की वासना का शिकार बनती है। वनतरी को भी कई बार उठाने की कोशिश की जाती है। लकडी के व्यापारी ठेकेदार भी गॉव की नारियो का यौन शोषण करते है। वनतरी में साहस, संघर्षप्रियता, अन्याय विरोध चेतना और अधिकार बोध की सही समझ है। साहु जब दुगने दाम से केरोसीन बेचता है, तो वह उसे जवाब माँगती है। इस बात से साहु उसके साथ बदतमीजी से पेश आता है तो खुले आम थप्पड मारती है । वनतरी पंचायत का विरोध करती है उसे इस बात का जवाब पुछते है तब वह कहती है, "क्या में पुछ सकती हूँ कि आप कौन होते है , इस तरह जवाब तलब करनेवाले? आप ठाकुर परमजीत सिंह है पर यह कछाहरी कैसी? क्या थाना मर गया कि आप मुझसे बयान ले रहे है।"[१३]

'सागर की गलिया' उपन्यास में केरल के दक्खिनी छोर पर बसा तुरूत अंचल केंद्र में है। सागर पर निर्भर जीवनयापन करनेवाले मछुआरो की कथा इसमें चित्रीत हुई है। तुरूत अंचल के मछुआरे कथा के केंद्र में है। वेलू मछुआरे का बेटा चातू इस कथा का प्रतिनिधित्व करता है। चातू की सहयोगी लक्ष्मी और बहन सरसू इन नारी पात्रो में भी स्वेछ्चाछारिता और यौन आसक्ति मिलती है। कलियम्मा, वेलुतम्मा और वटली यह नारी पात्र परंपरागत मछुआ नारियो का प्रतिनिधीत्व करती है। मछुआ नारियॉ पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है। मछली को बेचने का जिम्मा ये उठाती है। चातू नोकरानी खुशबू अरबी रखेल लक्ष्मी और होतू की युवतियो के साथ संबंध रखता है। लक्ष्मी और सुरसु भी शराब पीती है तथा अन्य पुरूषो से संबंध रखती है। अपने स्वार्थो की पूर्ती के लिए अन्यत्र यौन संबंध रखने को प्रकट समर्थन देती है। 'शैलेषु'की कथा मिर्जापूर और विंध्याचल के पूर्वांचल में विकसीत होती है। भूमीहिन नटो को सरकार द्वारा चालीस एकड भूमी प्रदान की जाती है । जमीनदार इस जमीन को हडप लेता है, जमीन की लडाई उपन्यास की प्रधान कथावस्तू है। नटो का अभावग्रस्त जीवन चित्रीत है । चमारो की शोषण की कथा है। सावित्री के चरित्र को लेखक ने आत्मीयता से चित्रीत किया है। वह केंद्र में है। सावित्री शर्मा उर्फ सब्बो मौसी अपने ज्ञान कार्य में और सोछा में अपना सानी नही रखती। वह धर्म राजनीति, रणनीति, इतिहास ज्योतिष, पुराण की पूरी जानकारी रखती है। हर समस्या का हल उसके पास है। उसके बोलने में बडा संयम और काम में समझदारी है। वह शोषण परंपरा जाति भेद इनका विरोध करती है। नट कबिले में पूज्य मानी जाती है। उसकी प्रशंसा करते हुए नौजादिक कहता है, "तुम आग हो मौसा आग जो तुम्हे शीतल कहता है वह अपने ही बनाये चक्रव्युह में फस जाता है। तुम्हारे उपर हाथ रखने की भी कोशिश किसी ने की तो उसके माथे में छेद हो जाता है।"[१४] नट युवती रूपमों जबर्दस्त उर्जा मिलती है। उसमें

स्वाभिमान, साहस और आत्मनिर्भरता है। अपरे छुरेबार्जी के आधारपर वह मर्दो को परास्त करती है। मान गुरू और नथीया बंजारीन के संबंध में प्रचलित लोककथा से उदात्त प्रेम, स्वाभिमान, स्वछंदी जीवन और नारी सन्मान का अंकन हुआ है। नट नारियो पर उशकी जाति के युवक बलात्कार करते है । सावित्री के नेतृत्व में कडा संघर्ष कर भूमिपर अधिकार हासिल करते है।

संजीव के उपन्यास 'धार' की नायिका मैना केंद्रिय पात्र के रूप में चित्रीत हुई है। उसके माध्यम से आदिवासी स्त्रियो का शोषण प्रस्तुत है। मैना का चरित्र दबंग स्त्री के रूप में चित्रीत हुआ है। समस्त आदिवासीयो की प्रचलित व्यवस्था के प्रति विरोध एवं संघर्ष मैना के माध्यम से व्यक्त हुआ है। वह निस्वार्थ भाव से संथाल परगना के आदिवासियो के शोषण विरूद्ध खडी होती है। तेजाब की फॅक्टरी तोडने का निश्चय कर वह रात के अंधेरे में अकेली की हाथ में कुल्हाडी लेकर फॅक्टरी की और निकल पडती है, उसका बाप लाठी लेकर पहरा देता हुआ रात भर फॅक्टरी का चक्कर काट रहा है। मैना और उसके बाप में धरम युद्ध छिड जाता है। मैना को किन्ही कारणो से जेल में बंद किया जाता है। जेल में पशुतुल्य जेलर साहब मैना पर बलात्कार करते है। परिणाम स्वरूप मैना को बच्चा पैदा होता है । अन्याय को सहना मैना पाप समझती है। उसके खिलाफ लडना धर्म समझती है । उपन्यास में पेट की आग को शांत करने के लिए रात में कई लडकिया एकान्त में ट्रक ड्रायव्हर के साथ अपना शरीर बेचकर कुछ कमाना चाहती है, तो दुसरी और मैना जैसी स्त्री है। मैना को भी उन भुखे भेडियो ने नही छोडा, उसके पति फोकल के अलावा मंगर, जेलर, पंडित सीताराम, जाने कितने मर्दो ने उसे नोचा है। एक बार बबन मैना को पकड लेता है। "उसके मुँह से निकल पडा मादरचोद। उसके साथ ही इस दारू से चाबियाये हाथ की कलईया उसकी मूठ में आकर बुडक हो उठी। दर्द सेबिल-बिलाकर वह जवान कुत्ते सा काय काय करने लगा। अरे बापरे। छोड दो टूट जायेगा। माँ तुम माँ हो पचास रूपया लेलो।"[१५]

भारतीय आदिवासी समाज में नारी की स्थिति न के बराबर है और जहा भी सूर्य की किरणे पहुँची है वे शायद प्रगतीका संकेत है। मैना सूर्य की किरण है जो आदिवासी समाज के लिए प्रेरणा रूप है। मैना को एक साथ कई लोगो के साथ संघर्ष करना पडता है। मैना एक बोल्ड स्त्री है, जिस डिब्बे में वह रहती है, एक साथ वह डिब्बे के आसपास चार पाच लोगो की आहट सुनती है, जैसेही वे गुंडे डिब्बे के दरवाजे तक आते है मैना उनपर तेजाब की शिशी उडेल देती है। मंगर के पूछने पर बताती है कुत्ता लोग थे भाग गये। मंगर सोनार जातिका था मैना आदिवासी सौता किन्तु वह उसके साथ खुले आम रहती है। अनेक रूप, मैना फोकल की परित्यक्ता है। मंगर की पत्नी है, अविनाश से नरम संबंध रखती है, उसके साथ पूरी बस्ती की सरदार बनी हूई है। मैना स्वयंसिद्धा नारी है । उसके भीतर विद्रोह का ऐसा लावारस उबलने लगता है मानो उसे छूते ही छूनेवाले झुलस जाये, भस्म हो जाये। मैना के साथ मोडलमासी, मुझियान, सलमा मेरी आदि अपने अधिकारो के प्रति सजग है। मैना की स्थिति का भयावह वर्णन इस प्रकार है, "माँ को डायन बताकर कुत्ती की तरह पीट पीटकर भगा दिया गया, बेटी सितवा को लालछा देकर लूटा गया, फिर फोकल की आदमीयत खरीद

ली गई, बेटी सितवा को लालछा देकर बरगला लिया गया। कुत्ता पराया है और टिपका भी उसका नही। फोकल का बेटा है , फिर उसकी झोली मे बचा क्या? एक प्रतिहिंसा की आग और एक नफरत का जजबा जो उसे कभी भी चैन नही लेने देते।"[१६] उपन्यास में मैना कुर्बानी देती है-बुलडोझर के नीचे मार दी जाती है, उपन्यासकार कहते है मैना शहीद होनेवाली है, मर नही सकती, "जहाँ जहाँ अंधेरे में जुगनू आप को चमकता दिखलाई दे इमानदारी से पुकारिए, मैना। कान साधे रहिए, बहुत गहराई से कोई जवाब आएगा, हूँ.....।"[१७]

**निष्कर्ष :-**

नवम दशक के आदिवासी उपन्यासो में नारी जीवन चित्रीत किया है। नारी अन्याय अत्याचारका विरोध करती है, संघर्ष करती है। पूँजीवादी शोषण व्यवस्था का विरोध करती है। नारियो में स्वाभिमान तथा साहस है। तो कही अपने पर हुए अत्याचार को चूपचाप सह लेती है। नारियो को निम्न कोटि का जीवन जीना पडता है। आदिवासी नारियो में निडरता, अधिकारबोध भी चित्रीत है। अपने स्वार्थपूर्ती के लिए पुरूषो से संबंध रखनेवाली नारियाँ भी चित्रीत है । आदिवासी नारिया परंपरा जातिभेदो का विरोध करती है। स्वयंसिद्धा नारियों का चित्रण भी नवम् दशक के आदिवासी उपन्यासो में आता है, नारी सूरज की किरण के समान प्रेरणा रूप में भी मिलती है।

**संदर्भ ग्रंथ :**

१. नालंदा विशाल शब्दसागर- पृष्ठ १२५-१२६.
२. मणिमधुकर पिंजरे मे पन्ना- पृष्ठ १२६
३. मणिमधुकर पिंजरे मे पन्ना - पृष्ठ ११५
४. मणिमधुकर पिंजरे मे पन्ना - पृष्ठ १४७
५. मणिमधुकर पिंजरे मे पन्ना - पृष्ठ ६३
६. राकेश वत्स- जंगल के आसपास- पृष्ठ १५७
७. राकेश वत्स - जंगल के आसपास- पृष्ठ १९५
८. राकेश वत्स - जंगल के आसपास- पृष्ठ १३८
९. डॉ. पांडूरंग पाटील, डॉ. गिरीश काशिद- नवम दशक के ऑची उपन्यास- पृष्ठ ५८
१०. हिंमाशु जोशी- सुराज (अंधेरा और) पृष्ठ ६४.
११. बटरोही-महर ठाकुरो का गाँव- पृष्ठ १८
१२. सुरेशछांद्र श्रीवास्तव- वनतरी, पृष्ठ १४.
१३. सुरेशछांद्र श्रीवास्तव- वनतरी, पृष्ठ ६२-६३
१४.शिवप्रसाद सिंह- शैलेषु, पृष्ठ २११
१५.संजीव- धार, पृष्ठ ११५.
१६. संजीव- धार, पृष्ठ १०६.
१७.संजीव- धार, पृष्ठ २०९